National Seminar

Unlocking Education: A Paradigm Shift

राष्ट्रीय संगोष्ठी

अनलॉकिंग शिक्षा: बदलाव के नए प्रतिमान

15 जुलाई 2021

सरकारी मॉडल कॉलेज, डीथोर, असम के सहयोग से विवेकानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय की कोविद -19 टास्क फोर्स और विद्या विस्तार समिति ने विभिन्न हितधारकों को इस विषय पर विचार-विमर्श हेतु मंच प्रदान किया।

कोविड-19 महामारी की मौजूदा स्थिति और आगामी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कॉलेजों के लिए शैक्षिक तंत्र और उसकी रणनीतियाँ को तय करने के विचार से डॉ सुखनीत सूरी के मार्गदर्शन में, विवेकानंद कॉलेज की कोविद 19 टास्क फोर्स और विद्या विस्तार समिति ने 'गूगल मीट' के माध्यम से संगोष्ठी का आयोजन किया। 15 जुलाई 2021 को सुबह 10:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक यह संगोष्ठी चलती रही इसके अलावा, फेसबुक पर इसका सीधा प्रसारण भी किया गया। इस संगोष्ठी का लगभग 250 शोधार्थियों ने लाभ उठाया।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत ईश्वर स्तुति के साथ हुई। इसके बाद प्राचार्या डॉ हिना नंदराजोग और गवर्नमेंट मॉडल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. दीपक बोरा द्वारा स्वागत भाषण दिया गया, जहां दोनों ने अपने-अपने कॉलेजों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। साथ ही कॉलेज परिसर की एक संक्षिप्त झलक प्रस्तुत की गई। विवेकानंद कॉलेज की विद्या विस्तार समिति और कोविड-19 टास्क फोर्स की संयोजिका डॉ सुखनीत सूरी ने संगोष्ठी के उद्देश्यों के बारे में गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने छात्रों और शिक्षकों के वर्तमान अनुभवों को साझा किया कि किस तरह ऑफ़लाइन मोड से शिक्षा और शिक्षण,पूरी तरह से ऑनलाइन मोड में स्थानांतरित हो गया है। कोविड -19 महामारी के दौरान मिश्रित शिक्षण मोड को लगभग छोड़ दिया। उन्होंने नई शिक्षा नीति और छात्रों पर इसके प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि वरिष्ठ शिक्षाविद् डॉ. आतिशी मार्लेना सिंह थीं। उन्होंने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दिशा में सार्वजनिक निवेश की भूमिका पर विशेष जोर देते हुए उच्च शिक्षा में अतीत और भविष्य के प्रमुख परिवर्तनों के बारे में बात की । डॉ राजीव गुप्ता(डीन ऑफ स्टूडेंट वेलफेयर, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने कॉलेज द्वारा की गई पहल की सराहना की और व्यक्तित्व विकास पर शिक्षा के महत्व पर जोर दिया। श्री मुनीश कौशिक (कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष , विवेकानंद कॉलेज) ने कोविड -19 महामारी के मद्देनजर ऑनलाइन शिक्षा को आगे बढ़ाने में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में बात की और वर्तमान शिक्षा प्रणाली की अक्षमताओं पर भी ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने उन पाठों की ओर भी ध्यान आकर्षित किया जो भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र से प्राप्त किए जा सकते हैं, जो उच्च लचीलापन प्रदर्शित करते हैं और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद शिक्षा प्रदान करना जारी रखते हैं। इसके पश्चात् डॉ सुखनीत सूरी ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए अगले सत्र का आरंभ किया ।

उद्घाटन सत्र के बाद दो तकनीकी सत्र हुए। पहले तकनीकी सत्र में प्रोफेसर वंदना सिंह(स्कूल ऑफ एजुकेशन, इग्नू) और डॉ प्रांजल बुरागोहेन(डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय) ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। दोनों ने वर्तमान शिक्षा और शिक्षण के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए,शिक्षा और वर्तमान पीढ़ी पर कोविड -19 के प्रभाव पर अपने मूल्यवान विचारों से सभी को अवगत कराया जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास संभव हो सकेगा। प्रो. वंदना सिंह ने COVID 19 महामारी के दौरान शिक्षा के तीन तत्वों यानि पुनर्गठन,प्रतिक्रिया और तैयारी पर भी ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने महामारी के फलस्वरूप उत्पन्न प्रमुख मुद्दों और समस्याओं से निपटने के लिए आवश्यक समाधान प्रस्तुत किए, अब तक चली आ रही शिक्षा प्रणाली में बदलाव को भी संबोधित किया । अंत में ऑन लाइन और ऑफ लाइन दोनों ही मार्गों से सीखने के दृष्टिकोण को अपनाने का सुझाव दिया ।

दूसरे तकनीकी सत्र को आगे दो श्रेणियों में विभाजित किया गया था। पहली श्रेणी में प्राध्यापकों , विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों से संबंधित पीएच, डी और स्नातकोत्तर छात्रों को शोध प्रस्तुतियों के लिए बुलाया गया और दूसरी श्रेणी में स्नातक छात्रों द्वारा प्रस्तुत विषय से संबंधित निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विविध प्रांतों के विविध शैक्षणिक संस्थानों के कुल इक्कीस प्रतिभागियों ने महामारी के दौर में उच्च शिक्षा के प्रतिमानों को प्राप्त करने के लिए चुनौतियों और समाधानों के बारे में बात की। छात्रों ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याओं, इसकी अक्षमताओं और उन पर कैसे अंकुश लगाया जाए, इसकी अब तक की उपलब्धियों के विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। बढ़ते वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के युग में विषयों की भरमार के बीच आदर्श शिक्षा के कौन से मानदंड रखें ? जैसे सवालों को उठाया गया । इस तरह छात्रों को एक मंच भी प्रदान किया जहां वे शिक्षा के संबंध में अपने व्यावहारिक विचारों को साझा कर सकें। कुल मिलाकर छात्रों और प्राध्यापकों दोनों ने ही इस मंच को भरपूर सार्थक और उपयोगी बनाया साथ ही अपनी सकारात्मक प्रतिक्रिया देकर संगोष्ठी की गरिमा बढ़ायी ।
तकनीकी सत्र के बाद समापन सत्र हुआ जहां परिणाम घोषित किए गए। शोध पत्र प्रस्तुति श्रेणी (प्राध्यापक /पीएचडी/पीजी छात्र) में सुश्री चयनिका लहकर, सुश्री गीताली दास और सुश्री इफ्रा रहमान ने क्रमशः पहला, दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त किया। निबंध वाचन (स्नातक श्रेणी) में, सुश्री प्रियांशी भटनागर, सुश्री स्नेहिल सचान और सुश्री प्रेरणा दास ने क्रमशः पहला, दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया। अंत में डॉ हिना नंदराजोग, डॉ सुखनीत सूरी और सुश्री विशाखा गोयल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन हुआ।

अंततः संगोष्ठी की सफलता का श्रेय विवेकानंद कॉलेज के शिक्षण और गैर-शिक्षण सहयोगियों के प्रयासों,प्रतिभागियों के उत्साही रवैये, छात्र प्रतिनिधियों के कुशल नेतृत्व और आयोजक मण्डल के सदस्य: डॉ सुखनीत सूरी (संयोजिका), सुश्री विशाखा गोयल (सह-संयोजिका), श्रीमती विनय त्रेहन, सुश्री रचना मेघ, डॉ मीना पाण्डेय, श्री जसप्रताप बरार , सुश्री वंदना राठौर, डॉ देबोजीत भुइयां और श्री दिव्य ज्योति दास को दिया जा सकता है ।